अध्याय–5

सुनियोजित विकास एवं सशक्त भारत के निर्माण की आधारशिला : नेहरू की भूमिका

आजादी के समय लगभग 30 करोड़ की आबादी वाले देश को उत्तराधिकार के रूप में एक बदहाल कृषि व्यवस्था एवं कुटीर उद्योग, भयंकर बेरोजगारी तथा गरीबी में जकड़ा हुआ एक वृहद समाज मिला। स्वतंत्रता के समय भारत विश्व के सर्वाधिक गरीब देशों में से एक था। उस समय देश औपनिवेशिक शोषण की पीड़ा, बंगाल के अकाल में हुई लगभग 30 लाख मौतों का दर्द एवं सन 1947 के विभाजन में आए करीब 15 लाख शरणार्थी जैसी समस्याओं से भी ग्रस्त था। मात्र 30.6 बिलियन डॉलर (1950 ई.) की राष्ट्रीय आय थी। वृहद भू–भाग, भौगोलिक विभिन्नताओं एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अति पिछड़ेपन के होते हुए सीमित आर्थिक संसाधनों का समुचित उपयोग कर संतुलित सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना देश के नीति निर्धारकों के समक्ष एक बड़ी चुनौती थी।

सन 1927 ई0 की रूस यात्रा से नेहरू वहाँ के सुनियोजित विकास से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने भारत में भी आर्थिक नियोजन का सपना संजोया। उन्होंने भारत के तीव्र आर्थिक विकास हेतु आर्थिक नियोजन का मार्ग प्रस्तुत किया। सन 1934 ई. में सर एम. विश्वेश्वेरैया ने अपनी पुस्तक प्लान्ड इकॉनोमी इन इण्डिया में सुनियोजित विकास के माध्यम से 10 वर्षों में विकास का एक प्रारूप प्रस्तुत किया। उन्होंने कृषि में संलग्न श्रम को उद्योगों से सम्बद्ध कर राष्ट्रीय आय को दोगुना करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसे भारत में आर्थिक नियोजन का पहला प्रयास कहा जाता है। इसके पश्चात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में राष्ट्र के पुनरुत्थान हेतु सुनियोजित विकास पर हुई चर्चा के परिणामस्वरूप सन 1938 में पं नेहरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय नियोजन समिति (नेशनल प्लानिंग कमेटी) का गठन हुआ।

राष्ट्रीय नियोजन समिति की रिपोर्ट भारत में आर्थिक नियोजन का आधार सिद्ध हुई। राष्ट्रीय नियोजन समिति ने भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में विशद जानकारी एकत्र करते हुए प्रत्येक क्षेत्र के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किए। इस प्रकार नेहरू ने स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व प्राप्त अवसर का पूर्ण सदुपयोग करते हुए, भारत में आर्थिक नियोजन की मजबूत आधारशिला की रूपरेखा प्रस्तुत की।

नेहरू रुस के योजनाबद्ध विकास के मॉडल के साथ–साथ समाजवादी व्यवस्था से भी अत्यधिक प्रभावित थे, लेकिन वे न तो निरंकुश अनुशासन व शक्ति के प्रयोग पर आधारित व्यवस्था में विश्वास रखने वाले रूस के बोल्शेविक विचारों से सहमत थे और न ही इंग्लैण्ड की पूँजीवादी व्यवस्था से।

उन्होंने एक नियोजित लोकतांत्रिक समाजवादी विकास की कल्पना की और स्वतंत्रता के बाद भारत ने सुनियोजित विकास का एक औपचारिक मॉडल अपनाया। इस सम्बन्ध में नेहरू के आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचारों को जानना व समझना अत्यंत आवश्यक है। उनके आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचार इस प्रकार थे :–

आर्थिक नियोजन सम्बन्धी विचार एवं योजना आयोग का गठन–

सुनियोजित विकास नेहरू की वैचारिक सम्पदा का व्यवहारिकता में साकार होने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आर्थिक नियोजन के क्षेत्र में नेहरू का सबसे बड़ा योगदान देश को एक सुनियोजित आर्थिक विकास का मॉडल प्रदान करना था। उन्होने एक नियोजित लोकतांत्रिक विकास की कल्पना की और स्वतंत्रता के बाद योजना बनाने का एक औपचारिक मॉडल अपनाया और उनकी अध्यक्षता में स्वतंत्र योजना आयोग का 15 मार्च, 1950 को गठन किया गया। देश के महत्त्वपूर्ण अर्थशास्त्रियों के साथ नेहरू ने विदेशों से जाने–माने अर्थशास्त्री बुलाए और देश को विकास के पथ पर अग्रसर करने हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना का ड्राफ्ट तैयार करवाया। नेहरू के प्रधानमंत्री के कार्यकाल में तीन पंचवर्षीय योजनाओं नें आयोग की स्थापना के उद्देश्यों यथा आमजन को आजीविका के पर्याप्त साधन उपलब्ध कराना, प्रत्येक वर्ग तक भौतिक संसाधनों का पहुँचना तथा सम्पदा एवं सम्पति के विकेन्द्रीकरण को साकार किया।

नेहरू की राज्य नियोजन में दृढ़ आस्था थी। उन्होंने यह भलीभांति समझ लिया था कि राष्ट्र की स्वतंत्रता किस प्रकार भारी उद्योगों व शक्ति संसाधनों पर आधारित है तथा स्वतंत्र भारत किस प्रकार विश्व की तकनीकी दौड़ में शामिल हो सकता है। यह नियोजित विकास न केवल भारत की आर्थिक स्वतंत्रता के लिए वरन भारतीय संस्कृति व आधुनिक विश्व के बीच जो अंतराल है उसे दूर करने के लिए भी आवश्यक है। नेहरू का यह सोचना था कि नियोजित औद्योगिक विकास के क्रियात्मक स्वरूप तथा समाजवादी नियत्रंण के अभाव में लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है। इस शताब्दी में पिछली शताब्दी की तरह यह पर्याप्त नहीं है कि राज्य सहायता व प्रेरणा पर आधारित निजी क्षेत्र का विकास किया जाये। नेहरू ने उपर्युक्त दृष्टिकोण को राज्य नियंत्रण के रूप में लागू भी किया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि राज्य के व्यापक नियंत्रण के पक्ष में जितने दृढ विचार नियोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में नेहरू ने व्यक्त किए वे अब कुछ उदार हो चुके थे। उनका समाजवादी दृष्टिकोण भी उतना उग्र नहीं रह गया था तथा उन्होंने देश में मिश्रित अर्थव्यवस्था का स्वरूप प्रस्तुत किया।

जनवरी, 1955 में अवड़ी प्रस्ताव (Avadi Resolution) के अंतर्गत नेहरू ने नियोजन का ध्येय भारत में समाजवादी समाज की स्थापना बताया। इस समाजवादी समाज के अंतर्गत उत्पादन के प्रमुख साधन सामाजिक स्वामित्व या नियंत्रण में रहेंगे, उत्पादन में तेजी से वृद्धि की जाएगी, राष्ट्रीय संपत्ति के समान वितरण की व्यवस्था की जाएगी। योजना में जनता की आवश्यकताएँ मौद्रिक रूप में नहीं मापी जानी चाहिए, अपितु वास्तविक भौतिक आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, सुविधाएँ, रोजगार आदि पर बल दिया जाना चाहिए और इनकी प्राप्ति उत्पादन वृद्धि द्वारा ही हो सकती है।

जवाहर लाल नेहरू ने आर्थिक नियोजन को राष्ट्र के आर्थिक विकास की रीढ की हड्डी बताया। उनका मानना था कि योजना आवश्यक है अन्यथा हम उत्पादन के सीमित साधनों का सर्वोत्तम उपयोग नहीं कर पायेंगे। योजना का अर्थ केवल परियोजनाओं का एकत्रीकरण नहीं होता, अपितु परियोजनाओं का आधार तय करना तथा उन्हें इस प्रकार प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करना है ताकि समाज का समग्र विकास संभव हो सके। हमारे देश में गरीबी की भयावह समस्या है। हमारे समक्ष सर्वदा एक कठिन विकल्प है–या तो हम कुछ चुने हुए क्षेत्रों में जो कि अनुकूल भी हैं, उत्पादन केन्द्रित करें और पिछड़े हुए क्षेत्रों को कुछ समय के लिए छोड़ दें, क्षेत्रीय आर्थिक असमानता को कम करने के लिए पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास भी साथ–साथ करें। इन विकल्पों के बीच एक संतुलन का मार्ग अपनाया गया तथा समेकित राष्ट्रीय योजना प्रस्तुत की गयी। एक राष्ट्रीय योजना में किसी भी प्रकार की कठोरताएँ नहीं होनी चाहिए। ये किसी भी हठधर्मिता पर आधारित नहीं होने चाहिए अपितु वर्तमान तथ्यों को ध्यान में रखकर होनी चाहिए। यह हो सकता है और आज के दिन जैसा मैं सोचता हूँ, बहुत से क्षेत्रों में निजी क्षेत्रों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इन निजी उपक्रमों को राष्ट्रीय

योजना में सम्मिलित करते हुए इन पर आवश्यक नियंत्रण भी लगाए जाने चाहिए।

नेहरू ने एक सामान्य आदमी को सामाजिक न्याय प्रदान करने की दृष्टि से नियोजन को बहुत अधिक महत्त्व दिया। उन्होंने अपनी पुस्तक ड़िस्कवरी ऑफ इण्डिया (Discovery of India) में कहा है कि "सामाजिक संरचना को समाज में संग्रह करने की प्रवृति को सीमित करना होगा तथा विकास में बाधाओं को दूर करना होगा। सामान्य आदमी के लाभ के लिए यह नियोजन पर आधारित होगा। यह लाभ जीवन स्तर में सुधार प्रगति के अवसरों में वृद्धि तथा मानव में अन्तर्निहित गुणों के विकास के रूप में प्राप्त हो सकते है। लेकिन ये सभी प्रयास लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में होने चाहिए।

नेहरू आर्थिक नियोजन के माध्यम से भारत को एक औद्योगिक राष्ट्र के रूप में परिणित करना चाहते थे। नियोजन के पीछे मूल विचार ही औद्योगीकरण रहा जिसके बिना गरीबी बेरोजगारी राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक पुनर्निर्माण संभव नहीं था। इस प्रकार एक राष्ट्रीय औद्योगीकरण योजना के अंतर्गत बडे पैमाने के आधारभूत उद्योग छोटे पैमाने के उद्योग व कुटीर उद्योग सम्मिलित होते है। ऐसा करते समय योजना के अंतर्गत कृषि को नहीं भुलाया जा सकता। नियोजन का क्षेत्र विस्तृत होता चला जाता है जब इसके अतर्गत सामाजिक सेवाओं को भी शामिल कर लिया जाता है।

नेहरू ने योजना निर्माण करते समय योजना आयोग को स्वच्छन्द नहीं छोडा। उनके अनुसार योजना आयोग को संविधान की सीमाओं के अंतर्गत ही योजना बनानी चाहिए। यद्यपि नेहरू स्वयं योजना आयोग के अध्यक्ष थे परन्तु लोकसभा में 15 दिसम्बर, 1952 को दिए गए वक्तव्य से नेहरू के विचार स्पष्ट हैं। उनके अनुसार हम लोग एक लोकतांत्रिक ढाँचे में काम कर रहें जिसे हमने खुद चुना है और जो हमारे संविधान में और संसद में निहित है। यह स्वाभाविक है कि हमारी योजना देश की व्यवस्था के अनुकुल होना चाहिए। लेकिन योजना आयोग को यह हक नहीं है कि वह कोई ऐसा कार्यक्रम बनाये जिसका हमारे संविधान या व्यवस्था से जिसके अधीन हम काम कर रहे है कोई वास्ता ही नहीं हो।

नेहरू ने भारत में नियोजन की बात जनतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत प्रस्तुत की अतः नेहरू द्वारा पल्लवित यह आर्थिक नियोजन "जनतांत्रिक नियोजन" कहलाता है। हमारे देश में योजना आयोग कोई सर्व शक्ति संपन्न संस्था नहीं थी। यद्यपि योजना आयोग के पदेन अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते थे तथापि योजना आयोग योजना का निर्माण करता है किन्तु अंत में योजना के क्रियान्वयन हेतु इसे संसद के पटल पर रखा जाता था। योजना का क्रियान्वयन केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा किया जाता था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि योजना आयोग का गठन मंत्रीमण्डलीय प्रस्ताव द्वारा हुआ तथा यह एक परामर्शदाता निकाय था।

नेहरू ने योजना की अवधि को लेकर यह मत व्यक्त किया कि योजना दीर्घकालिक व अल्पकालिक दोनों ही प्रकार की होनी चाहिए। दीर्घकालिक लक्ष्य अल्पकालिक योजनाओं से प्राप्त किए जाएँ। पंचवर्षीय योजनाओं को मध्यवर्ती कड़ी के रूप में प्रभावी भूमिका निभानी चाहिए। नेहरू के शब्दों में "यह सबसें जरूरी है कि हम 15 वर्ष की अवधि में क्या हासिल करना चाहते हैं, इसका हमें सही और साफ विचार हो। फिर हम इस बड़ी और सामान्य योजना में समायोजित हो सकने वाली छोटी छोटी योजनाओं पर आ सकते हैं। और फिर सबसे छोटी, यानि एक साल की या वार्षिक योजना भी बड़ी योजना में समायोजित होनी चाहिए।

पंचवर्षीय योजना का एक बड़ा ढाँचा होना चाहिए जिसमें उपर्युक्त परिवर्तन हो सके जो सिर्फ हमारे साधनों की दृष्टि से न हो बल्कि उस दीर्घावधि तस्वीर को ध्यान में रखते हुए भी हो जो वक्त के साथ–साथ हम विकसित करते हुए जाएंगे। जब हम अपने सामने 15 वर्ष का लक्ष्य रखेंगे तो छोटी–छोटी योजनाओं को स्वीकार करना हमारे लिए आसान हो जाएगा।"

नेहरू का मत था कि ''अपने निर्धारित लक्ष्यों को पाने के लिए नियोजन एक सतत् प्रक्रिया है ....दीर्घ अवधि योजना का तात्पर्य पाँच वर्षीय योजना ना होकर 15 से 20 वर्षीय योजना होनी चाहिए जिसमें सामाजिक संरचना को दृष्टिगत रखा जाए। सामान्य व्यवस्थाओं का समेकित अध्ययन किया जाना चाहिए तथा विविध क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए प्रगति का मार्ग तलाशना चाहिए। यही देश को भलाई के मार्ग पर ले जाने का उचित प्रयास होगा।''

नेहरू के समाजवादी कार्यक्रम को भारत के तत्कालीन अग्रणी उद्योगपतियों ने सन 1944 ई0 में समर्थन प्रदान किया। इन उद्योगपतियों में जहाँगीर, रतनजी टाटा, घनश्यामदास बिड़ला, पुरुषोत्तम ठाकुरदास आदि शामिल थे। इनके द्वारा जो ऐतिहासिक दस्तावेज तैयार किया गया उसे "भारत के आर्थिक विकास की योजना" अथवा "बॉम्बे प्लान" के नाम से जाना जाता है।

सन 1946 ई0 में के.सी. नियोगी की अध्यक्षता में गठित नियोजन परामर्शदात्री मण्डल (Planning Advisory Board) की सिफारिश के आधार पर केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के प्रस्ताव द्वारा 15 मार्च, 1950 को पहली बार जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में योजना आयोग का गठन किया गया। यह एक परामर्शदात्री निकाय था। योजना आयोग देश में सामाजिक और आर्थिक विकास के नियोजन की सर्वोच्च संस्था थी।

योजना आयोग का गठन संविधान के तीन सिद्धान्तों को पूरा करने के लिए किया गया–

1. भारत के सभी नागरिकों, स्त्री और पुरूष का जीवन निर्वाह के समस्त साधनों पर समान अधिकार है।
2. सभी भौतिक साधनों का उपयोग व वितरण इस प्रकार हो कि वह आम लोगों की प्रगति का माध्यम बनें।
3. आर्थिक विकास कैसे भी पूँजी के केन्द्रीकरण का कारण न बन कर आम जनता तक पहुंचने का माध्यम बने।

योजना आयोग को मुख्य रूप से निम्न कार्य सौपें गये :–

1. देश के भौतिक, पूँजी एवं मानव संसाधनों का आकलन कर उनमें वृद्धि की संभावनाएँ तलाश करना।
2. देश के संसाधनों के प्रभावी एवं समुचित उपयोग हेतु योजना बनाना।
3. योजनाओं के क्रियान्वयन की प्राथमिकताओं और उनके चरणों का निर्धारण करना।
4. आर्थिक विकास में बाधक तत्त्वों की पहचान करना।
5. प्रत्येक चरण के सफल क्रियान्वयन के लिए अपेक्षित तंत्र की प्रकृति का निर्धारण करना।
6. योजनाओं के क्रियान्वयन की समय–समय पर समीक्षा करना तथा आवश्यक समायोजनों की अनुशंसा करना।
7. आयोग के कर्तव्यों के निर्वहन को सुगम बनाने या केन्द्र अथवा राज्य सरकारों द्वारा किसी विषय पर मांगी गयी सलाह से सम्बन्धित अनुशंषा करना।

कार्य विभाजन प्रणाली के माध्यम से योजना आयोग को परिप्रेक्ष्य नियोजन, राष्ट्रीय विकास में जन सहयोग, पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र तथा इंस्टीट्यूट ऑव एप्लाइड मैन पावर रिसर्च आदि विषय भी सौंपे गए। प्रथम योजना आयोग के मुख्य सदस्यों में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के अतिरिक्त वरिष्ठ नौकरशाह वी0 टी0 कृष्णमाचारी, तत्कालीन वित्त मंत्री, सी0 टी0 देशमुख, जे0 सी0 घोष और के0 सी0 नियोगी थे। नेहरू के अतिरिक्त सभी सदस्यों को विशेष क्षेत्र की जिम्मेदारियाँ दी गई थी। जैसे, प्रथम योजना में कृष्णमाचारी के पास कृषि, सिंचाई एवं उर्जा, घोष के पास शिक्षा, सामाजिक कल्याण एवं

सामुदायिक विकास तथा नियोगी के पास उद्योग, वाणिज्य एवं परिवहन और देशमुख के पास वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी थी। सन 1950 ई0 के बाद प्रत्येक योजना भारत के विकास का एक प्रमुख घटक रही है। प्रत्येक योजना के लागू होने से पूर्व पूर्ववर्ती योजना का मूल्यांकन किया गया तथा भविष्य के लिए कार्ययोजना तैयार की गई। प्रत्येक योजना के कुछ मुख्य लक्ष्य निर्धारित किए गये जिससे भारत में सुनियोजित विकास की अवधारणा की पुष्टि हो सकी।

योजना आयोग की स्थापना मूलतः एक स्टॉफ एजेन्सी के रूप में केन्द्र सरकार को परामर्श देने की दृष्टि से की गई थी लेकिन बाद में आयोग एक शक्तिशाली और दिशा–निर्देशक प्राधिकरण के रूप में उभरा।

नवसृजित स्वतंत्र देश के लिए नियोजित विकास अत्यावश्यक था। ब्रिटिश शासन के दुष्प्रभावों ने भारत में एक छिन्न–भिन्न अर्थव्यवस्था, आर्थिक असमानता से जकड़े हुए विभिन्न वर्ग, सीमित क्षेत्र में किया गया औद्योगीकरण और संसाधनों एवं संपदा का असमान वितरण छोड़ा था। यह भी उल्लेखनीय है कि आजादी से पूर्व ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक नीतियों एवं संसाधनों पर सत्ता का पूर्ण नियत्रंण था जिसका नकारात्मक प्रभाव आम जन को पूर्णतया प्रभावित कर रहा था। अतः आजादी के पश्चात संसाधनों एवं समृद्धि के समान वितरण के लिए आवश्यक था कि पूँजी का पूर्ण नियत्रंण सत्ता एवं निजी हाथों में न होकर सार्वजनिक क्षेत्र के लिए भी हो। इसीलिए स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने पूर्ण समाजवादी या पूर्ण पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अपनाने की अपेक्षा मध्यमार्गी नीति अपनाकर मिश्रित अर्थ व्यवस्था का रास्ता अपनाया। इस सुनियोजित विकास की योजना में सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना का भी विशेष योगदान रहा।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39 में यह उल्लेखित किया गया है कि ''राज्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी नीति को इस प्रकार निर्देशित करे कि देश के भौतिक साधनों के स्वामित्व, नियंत्रण एवं वितरण में सामान्य हितों का संवर्द्धन हो और आर्थिक प्रणाली के संचालन के फलस्वरूप जनहित के विरुद्ध सम्पत्ति एवं उत्पादन के साधनों का केन्द्रीकरण नहीं हो।''

सभी विकसित, विकासशील एवं अल्पविकसित देशों ने योजना निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र के महत्त्व को स्वीकार किया। संयुक्त राज्य अमेरिका जो पूँजीवाद अर्थात निजी क्षेत्र का प्रमुख समर्थक देश है, वहां भी 1930 की विश्वव्यापी मंदी के परिणामस्वरूप टेनेसी वेली परियोजना (Tennessee Valley Authority) जैसे उपक्रम सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किए गये।

भारत को सुनियोजित विकास से प्रगति पथ पर अग्रसर करने के लिए योजना आयोग निस्सन्देह एक महत्त्वपूर्ण उपकरण रहा जिसे निम्नलिखित प्रारम्भिक तीन पंचवर्षीय योजनाओ के उद्देश्य व उनकी उपलब्धियों से सहज ही समझा जा सकता है। ये तीनों पंचवर्षीय योजनाएं पं. नेहरु के नेतृत्व में क्रियान्वित की गई।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–1956)–

प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य संतुलन स्थापित कर देश को विकास यात्रा के पथ पर अग्रसर करना था। इसे मिश्रित अर्थव्यवस्था के माध्यम से कार्यान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र के साथ–साथ निजी क्षेत्र भी अपनी भूमिका निभा सके। प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि, सिंचाई व विद्युत कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। लौह, स्टील, कैमिकल तथा इलेक्ट्रिक उपकरणों से सम्बन्धित उद्योगों एवं उपक्रमों की स्थापना की गई। सामाजिक सेवाओं जैसे शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया तथा सामुदायिक सेवाओं के लिए स्थानीय प्रयासों पर बल दिया गया।

प्रथम योजना का प्रारूप योजना आयोग द्वारा जुलाई, 1951 में प्रस्तुत किया गया। इसके दो भाग थे, एक भाग में 1493 करोड़ रूपये का प्रावधान था। इनमें शामिल परियोजनाओं को आवश्यक रूप से पूरा करना था तथा दूसरे भाग में 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया जिसे बाहरी सहायता मिलने पर पूर्ण किया जाना था। प्रथम योजना के प्रारूप को अन्तिम रूप प्रदान करते समय दोनों भागों को एक कर दिया गया तथा सम्मिलित रूप से 2069 करोड़ रुपये की योजना तैयार की गई। बाद में इस राशि को बढाकर 2377 करोड़ रुपये किया गया। इस योजना में सिंचाई एंव ऊर्जा के लिए 647 करोड़ रुपये, परिवहन एवं संचार के लिए 570 करोड़ रुपये, सामाजिक सेवाओं के लिए 532 करोड़ रुपये, कृषि एवं सामुदायिक सेवाओं के लिए 354 करोड़ रुपये तथा उद्योग एवं खनन के लिए 188 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।

योजना में राष्ट्रीय आय में 13 प्रतिशत की वृद्धि का लक्ष्य रखा गया जबकि पाँच वर्षो में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई । प्रति व्यक्ति आय 11 प्रतिशत व उपभोग स्तर में 8 से 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कृषिगत उत्पादन में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा औद्योगिक उत्पादन में 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस योजना में विज्ञान, तकनीक, शोध, भारी उद्योग, ग्रामीण उद्योगों, हैण्डीक्राफ्ट एवं बांधो के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। सामाजिक सेवाओं में, विशेषकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में मलेरिया निवारण के लिए 10 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया। अनुसूचित जाति, जनजाति, जरायम पेशा जातियों के लिए औद्योगिक आवासों के निर्माण के लिए 49 करोड़ का प्रावधान किया गया। इस योजना के दौरान विभिन्न सिंचाई परियोजनाएँ प्रारम्भ की गई जैसे भांखडा नांगल, हीराकुण्ड तथा दामोदर घाटी परियोजना आदि। इन नदी घाटी योजनाओं को नेहरु ने आधुनिक भारत के मंदिर कहा है। प्रथम योजना के अन्तिम वर्ष 1956 में पाँच आई.आई.टी प्रारम्भ किए गये। इस योजना के अन्तर्गत ही देश के उच्च शिक्षा ढाँचे को मजबूत बनाने के लिए सन 1956 ई0 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गई।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में इस बात पर भी बल दिया गया कि सरकार को सामाजिक–आर्थिक दायित्वों को पूरा करने के लिए उन आवश्यक उद्योगों को स्थापित करना होगा जिनमें निजी क्षेत्र अपनी भूमिका नहीं निभाना चाहता। इस योजनाकाल में हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, इन्टीग्रल कोच फैक्ट्री, खादी एवं विलेज इंडस्ट्रीज बोर्ड, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लिमिटेड, एयर इंडिया इन्टरनेशनल, इंडियन एयरलाइन्स कॉरपोरेशन, भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया तथा अशोका होटल्स लिमिटेड आदि उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किए गये। प्रथम योजना एवं आने वाली अन्य योजनाओं में सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना से देश के त्वरित आर्थिक विकास एवं औद्योगीकरण में सहायक तथा आर्थिक विकास हेतु आधारभूत संरचना का निर्माण करना,संतुलित क्षेत्रीय विकास को सुनिश्चित करना, रोजगार के अवसरों का तीव्र गति से सृजन, आय एवं सम्पत्ति का पुनर्वितरण, लघु एवं सहायक उद्योगों की स्थापना, आर्थिक शोषण पर रोक, समाजवादी समाज के लक्ष्य की प्राप्ति, सम्पत्ति एवं उत्पादन के साधनों के संकेन्द्रण पर अंकुश, निर्यात को प्रोत्साहन तथा अर्थव्यवस्था के लिए बचत एवं विदेशी पूँजी जुटाना, निजी क्षेत्र के लिए आदर्श एवं प्रतिस्पर्धा का प्रतिमान प्रस्तुत करना, तथा प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक विदोहन सुनिश्चित करना संभव हो सका।

इस योजना के अन्तर्गत सुनियोजित विकास एवं आधारभूत संरचना के निर्माण हेतु विभिन्न शोध संस्थानों व उपक्रमों को स्थापित किया गया जो तत्कालीन नीति नियंताओं के वृहद दृष्टिकोण को परिलक्षित करती है। इन संस्थानों व उपक्रमों के चित्र, उनकी स्थापना की तिथियों के साथ संलग्न हैं।

सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लखनऊ

17 फरवरी, 1951 को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उद्घाटन किया।

सेन्ट्रल इलेक्ट्रोकेमिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, कराईकुड़ी

तमिलनाडु इलेक्ट्रो केमिस्ट्री के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए CSIR की राष्ट्रीय प्रयोगशाला के रूप में जनवरी, 1953 को स्थापित किया गया। इस संस्था की स्थापना में अलगप्पा चेटियार, पं जवाहर लाल नेहरू एवं डॉ शांति स्वरूप भटनागर की प्रमुख भूमिका रही।

केन्द्रीय खाद्य प्रौधोगिकी अनुसंधान संस्थान मैसूर

CSIR की सम्बद्ध प्रयोगशाला के रूप में प्रौद्योगिकी विकास, खाद्य सुरक्षा और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में शोध के लिए सन 1950 ई. में स्थापित किया गया।

केन्द्रीय ग्लास एवं सेरेमिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

खनिज स्रोतों के अध्ययन के लिए सीमित रूप में 1944 ई. में स्थापित हुआ लेकिन 26 जनवरी, 1950 को विधिवत रूप से इसका उद्घाटन हुआ।

केन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई

चमड़े के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए 24 अप्रैल, 1948 में स्थापित किया गया।

नेशनल केमिकल लेबोरेट्री, दिल्ली

रसायन एवं रसायन अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए 1950 ई. में स्थापित की गयी।

नेशनल मेटलर्जीकल लेबोरेर्ट्री, जमशेदपुर

धातु प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान के लिए स्थापित की गई। सर्वप्रथम 21 नवम्बर, 1946 को स्वतंत्र भारत के पहले गर्वनर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी द्वारा फाउंण्डेशन स्टोन रखा गया तथा 26 नवम्बर, 1950 को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा इसका विधिवत् उद्घाटन किया गया।

नेशनल फिजिकल लेबोरेट्री, दिल्ली

माप–तौल इकाईयों के क्षेत्र में शोध के लिए नेहरू द्वारा 04 अक्टूबर, 1947 को इसकी अधारशिला रखी गयी तथा 21 जनवरी, 1950 को सरदार बल्लभ भाई पटेल ने इसका उद्घाटन किया।

गाँधी सागर बांध

यह बांध मध्यप्रदेश के नीमच एवं मन्दसौर जिले में स्थित है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 7 मार्च, 1954 को इसकी आधारशिला रखी।

तुंगभद्रा बांध—यह बांध कर्नाटक के होस्पेट तथा बेल्लारी जिले में स्थित है । इसके मुख्य आर्किटेक्ट चेन्नई के थिरूमल अय्यर थे। यह 1953 ई. में बनकर तैयार हुआ।

भाखड़ा नांगल बांध

1944 ई. में पंजाब के राजस्व मंत्री सर छोटूराम ने विलासपुर हिमाचल प्रदेश के राजा के साथ इसके निर्माण के लिए समझौता किया। 1948 ई. में इसका निर्माण प्रारम्भ हुआ। 17 नवम्बर, 1955 को नेहरू ने प्रतीकात्मक रूप से इस बांध में कंक्रीट डालकर इसकी शुरूआत की। जवाहरलाल नेहरू ने इसे चमत्कारिक वस्तु कहा।

नेशनल फर्टिलाइजर लिमिटेड, नांगल

खाद्य क्षेत्र में अनुसंधान के लिए 1961 ई. में स्थापित किया गया।

भारत इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड की स्थापना सन 1954 में बैंगलोर में की गयी।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड भारत का एक पोत प्रांगण है, जो विशाखापट्टनम में स्थित है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना मार्च, 1956 में समाप्त हुई। इस योजना ने भारत में समाजवादी व्यवस्था को स्थापित करने का आधार रखा। इस योजना ने स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र के मूल्यों से परिपूर्ण सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की नींव रखी जो जाति, वर्गभेद तथा क्षेत्रवाद से ऊपर थी। इन संस्थानों की स्थापना ने रोजगार का सृजन किया तथा उत्पादन में वृद्धि की, जो एक विकासशील देश के लिए एक आधारभूत आवश्यकता थी।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956–61)–

अप्रैल, 1954 में योजना के प्रारम्भ होने के पूर्व आयोग ने राज्य सरकारों को जिले व ग्राम स्तर की योजनाएँ विशेष तौर पर तैयार करने का आग्रह किया जिसमें विशेष रूप से कृषि उत्पादन एवं ग्रामीण उद्योगों की महत्ता को सम्मिलित किया जाना था। स्थानीय स्तर पर इन योजनाओं को तैयार करवाने का कारण प्रत्येक क्षेत्र विशेष की आवश्यकताएँ, भौगोलिक संरचना तथा विकास का स्तर भिन्न होना था। अतः इस प्रकार से योजना में आम–जन को सम्मिलित करने का सफल प्रयास किया गया। इस योजना के निर्माण में विख्यात सांख्यिकीविद महालनोबिस का योगदान रहा। उन्हीं के दिये गये मॉडल पर इस योजना का निर्माण किया गया। उनका मत था कि देश में आधारभूत उद्योगों की स्थापना की जाए ताकि कृषि तथा अन्य संबद्ध उद्योगो के लिए अवसर उपलब्ध हो सकें। इस योजना के उद्देश्य इस प्रकार थे–

1. प्रथम योजना में स्थापित संस्थानों का विकास करना तथा इन संस्थानों में होने वाले शोध को भारत के विकास के उपयोग में लिया जाना।
2. औद्योगिक तथा तकनीकी विकास को प्राथमिकता देना।
3. राष्ट्रीय आय में वृद्धि जिससे जीवन स्तर को सुधारा जा सके।
4. रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
5. आय एवं सम्पदा के वितरण में असमानता के अन्तर को कम करना।

द्वितीय योजना का प्रारूप फरवरी, 1956 में आया तथा संसद ने इसे मई, 1956 में पारित किया। इस योजना में सार्वजनिक क्षेत्र के लिए 4800 करोड़ एवं निजी क्षेत्र के लिए 2400 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया। इस योजना में परिवहन, संचार, उद्योग एवं खनन पर कुल योजना के 50 प्रतिशत का प्रावधान रखा

गया। द्वितीय योजना में स्वेज नहर संकट व कुछ अन्य समस्याओ के कारण सार्वजनिक क्षेत्र की परियोजनाओं की अनुमानित लागत में वृद्वि होने लगी। 4800 करोड़ सार्वजनिक क्षेत्र के प्रावधान की सीमा को बढ़ाए जाने पर विचार हुआ। इस हेतु मई, 1958 में राष्ट्रीय विकास परिषद ने संसद को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा 3 विकल्प सुझाए–

1. योजना का प्रावधान 4260 करोड़ रुपये किया जाए।
2. योजना का वास्तविक प्रावधान 4800 करोड़ रुपये ही रखा जाए तथा सिचांई, ऊर्जा, सामाजिक सेवा के बजट में कटौती की जाए।
3. योजना का प्रावधान 4500 करोड़ रुपये कर कुछ मुख्य परियोजनाओं को पूरा किया जाए।

राष्ट्रीय विकास परिषद ने तीसरे बिन्दु पर सहमति व्यक्त कर योजना को दो भागों में विभाजित किया। पहले भाग में 4500 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया जिसमें मुख्य प्रोजेक्ट शामिल थे तथा दूसरे भाग में 300 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया जिसे पर्याप्त वित्तीय संसाधन प्राप्त होने पर पूरा किया जाना था।

पूर्व व संशोधित प्रावधानों के अनुसार क्षेत्रवार अनुमानों की तालिका निम्नानुसार थी :–

(राशि करोड़ों में)

क्षेत्र	प्रावधान 4800 करोड़	प्रतिशत	प्रावधान 4500 करोड़	प्रतिशत
परिवहन एवं संचार	1345	28.0	1340	29.8
उद्योग एवं खनिज	880	18.4	790	17.5
सामाजिक सेवाएं	863	18.0	810	18.0
कृषि एवं सामुदायिक सेवाएं	568	11.8	510	11.3
सिंचाई एवं ऊर्जा	860	17.9	820	18.2
ग्रामीण एवं लघु उद्योग	200	4.2	160	3.6
विविध	84	1.7	70	1.6
योग	4800	100	4500	100

इस योजना में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 95 करोड़ रुपये की सहायता ली गई। विदेशी सहायता में अमेरिका, रूस, पश्चिमी जर्मनी तथा जापान से सहायता प्राप्त की तथा वर्ल्ड बैंक ने रेल्वे एवं बंदरगाहों के विकास के लिए सहायता प्रदान की।

दूसरी योजना में राष्ट्रीय आय में 10 प्रतिशत वृद्धि हुई। कृषि उत्पादों में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई तो प्रतिव्यक्ति आय 11 प्रतिशत बढ़ी। विनियोग की दर जो प्रारम्भ में राष्ट्रीय आय का 7.3 प्रतिशत थी जो बढ़कर 11 प्रतिशत हो गई। सिंचित क्षेत्र 2.26 करोड़ हैक्टेयर से 2.8 करोड़ हैक्टेयर हो गया तथा विद्युत का उत्पादन 34 लाख किलोवाट से बढ़कर 56 लाख किलो वाट हुआ।

इस योजना काल में समाजवादी समाज की स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सन 1956 में नई औद्योगिक नीति की घोषणा की। इसमें आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए तीव्र औद्योगीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया। इस काल में सार्वजनिक क्षेत्र में ओ.एन.जी.सी., हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, नेशनल कोल डवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, इंडियन रिफाईनरीज लिमिटेड, इंडियन ऑयल लिमिटेड, हिन्दुस्तान टेलीप्रिन्ट्स लिमिटेड आदि लोक उपक्रमों की स्थापना की गई। इसी योजनाकाल में भिलाई, दुर्गापुर एवं राऊरकेला इस्पात संयत्रों की स्थापना की गयी।

इस योजना में जहाँ एक तरफ विज्ञान, तकनीक, उद्योग एवं कृषि को प्राथमिकता दी गई, वहीं दूसरी ओर शिक्षा मंत्रालय ने सांस्कृतिक एकता एवं विकास से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमो की रूपरेखा बनाई जो निम्न प्रकार थी –

1. हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास।
2. नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना।
3. बनारस एवं कुरूक्षेत्र में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना।
4. कला एवं संस्कृति के विकास के लिए संगीत, नृत्य, नाटक अकादमी की स्थापना।
5. पुरातत्त्व विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा नृविज्ञान विभाग का विकास।

भिलाई इस्पात कारखाने की स्थापना सन 1955 में सोवियत रूस के सहयोग से की गई।

तेल और गैस उत्पादन के लिए **ओ.एन.जी.सी.** की स्थापना 14 अगस्त, 1956 में की गई।

हिन्दुस्तान टेलिप्रिन्टर लिमिटेड की स्थापना चेन्नई में संचार उपकरणों के निर्माण के लिए सन 1960 ई. में सार्वजनिक उपक्रम के रूप में की गई।

भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड की स्थापना भारी विद्युत उपकरणों के निर्माण के लिए सन 1956 ई. में उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय के अन्तर्गत सार्वजनिक उपक्रम के रूप में की गई।

तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961–66)

तृतीय योजना का प्रारूप बनाने का कार्य 1958 में प्रारम्भ किया गया तथा यह 1 अप्रेल, 1961 से प्रारम्भ हुई। इसका प्रारम्भिक प्रारूप मार्च, 1960 को राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक में प्रस्तुत किया गया तथा जुलाई, 1960 में इसे प्रकाशित किया गया।

इस योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार थे–

1. राष्ट्रीय आय में प्रतिवर्ष 5 प्रतिशत की वृद्धि।
2. अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता तथा उद्योगों की आवश्यकता पूर्ति एवं निर्यात के लिए कृषि उत्पादों में वृद्धि।
3. आधारभूत उद्योगों का विकास करना जिससे 10 वर्षों में देश की औद्योगिक आवश्यकताओं की आन्तरिक संसाधनों से पूर्ति की जा सके।
4. रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

तीसरी योजना में 7500 करोड़ का प्रावधान सार्वजनिक क्षेत्र के लिए तथा 4100 करोड़ का प्रावधान निजी क्षेत्र के लिए किया गया।

इस योजना के दौरान दो प्रमुख बाधाएँ आयीं। सन 1962 और सन 1965 में क्रमशः चीन और पाकिस्तान से संघर्ष के कारण रक्षा बजट में वृद्धि की गई। इस योजना के दौरान भी 5 में से 3 वर्षो में पर्याप्त वर्षा नहीं हुई तथा बाहरी वित्तीय सहायता भी कम प्राप्त हुई। इन समस्याओं के बावजूद भी इस योजना ने उपलब्धियाँ अर्जित की जैसे, राष्ट्रीय आय 13.8 प्रतिशत व प्रति व्यक्ति आय 5.3 प्रतिशत की दर से बढ़ी। विनियोग की दर राष्ट्रीय आय के 11 प्रतिशत से बढ़कर 14.15 प्रतिशत हो गई और बचत की दर 8.5 प्रतिशत से बढ़कर 11.5 प्रतिशत हो गई। कृषिगत उत्पादन 16 प्रतिशत बढ़ा, औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि 8 प्रतिशत रही तथा आधारभूत उद्योगों में उत्पादन वृद्धि 15 प्रतिशत से 16 प्रतिशत वार्षिक रही ।

इस योजना में आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण एवं एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखने के लिए लोक उपक्रमों को सशक्त माध्यम मानते हुए उन्हें और मजबूत बनाने का लक्ष्य रखा गया। इस योजनावधि में

भारतीय खनिज एवं धातु व्यापार निगम, यूनिट ट्रस्ट ऑव इंडिया, नेशनल सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड, भारतीय खाद्य निगम, हिन्दुस्तान एयरोनोटिक्स लिमिटेड, सीमेंट कार्पोरेशन ऑव इंडिया, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट बैंक ऑव इंडिया, तथा सांभर साल्ट्स लिमिटेड आदि लोक उपक्रमों की स्थापना की गई। उपर्युक्त तीन पंचवर्षीय योजनाओं एवं तीन वार्षिक योजनाओं की प्रगति से यह स्पष्ट होता है कि आधारभूत संरचना के विकास के लिए विविध क्षेत्रों में जैसे तेल, कोयला, इस्पात धातु कृषि, खाद्य एवं बीज, सीमेन्ट, कपड़ा उद्योग पेट्रो केमिकल्स इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में लोक उपक्रम स्थापित किए गए। जिनकी आगे चलकर देश के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

क्षेत्र	प्रावधान	प्रतिशत
उद्योग एवं खनिज	1520	20.0
परिवहन एवं संचार	1486	20.0
सामाजिक सेवाएं एवं विविध	1300	17.0
कृषि एवं सामुदायिक सेवाएं	1068	14.0
ऊर्जा	1012	13.0
सिंचाई	650	9.0
ग्रामीण एवं लघु उद्योग	264	4.0
विविध	200	3.0

तृतीय योजना में अर्थव्यवस्था को विकास के उच्च स्तर तक ले जाने का प्रयास किया गया तथा स्व–पोषित या आत्मनिर्भर (self sustain) वृद्धि का लक्ष्य रखा गया। सन 1962 में चीन तथा सन 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध व सन 1965–66 में सूखे की मार ने इस योजना में वृद्धि के लक्ष्य को सीमित कर दिया। इस योजना की असफलता व 1966 के अवमूल्यन के पश्चात् भी निर्यातों में स्थिरता ने चौथी योजना को स्थगित करने को विवश कर दिया तथा 1966 से 1969 की अवधि में भारत में 'योजना अवकाश' रहा। चौथी पंचवर्षीय योजना (1969–74) में भी द्वितीय तथा तृतीय योजना के उद्देश्यों के अनुसार ही स्थिरता के साथ विकास, पर्याप्त वृद्धि के साथ आत्मनिर्भरता तथा सामजिक न्याय व समानता के उद्देश्य को अपनाया गया। पांचवी पंचवर्षीय योजना में आत्मनिर्भरता की प्राप्ति व निर्धनता उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया। साथ ही इस योजना में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करके स्थिरता लाने का उद्देश्य भी तय किया गया। जनता सरकार ने पांचवी पंचवर्षीय योजना को जो 1979 ई. में समाप्त होनी थी, एक वर्ष पूर्व समाप्त कर दिया। सन 1978–80 में दो एक वर्षीय योजनाओं के पश्चात् छठी योजना में उन्हीं उद्देश्यों के साथ न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम जैसे कई कार्यक्रमों के माध्यम से निर्धनता तथा बेरोज़गारी को दूर करने के लक्ष्य रखे गए। सातवीं योजना में (1985–90) में भी वृद्धि, आधुनिकता, आत्मनिर्भरता तथा सामजिक न्याय को महत्व दिया गया किन्तु समस्या उद्देश्यों को प्राप्त करने की रही। अंतर्राष्ट्रीय तथा राजनीतिक अस्थिरता के कारण आर्थिक सुधार कालावधि में आठवीं योजना अप्रैल, 1992 से आरम्भ हुई। इस योजना का उद्देश्य सभी संदर्भों में मानव विकास करना था,

इस हेतु आधारभूत ढाँचे शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार से सम्बन्धित लक्ष्य निर्धारित किए गए। नवीं योजना के समय जब समस्त विश्व में खुली बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं की अवधारणा पर बल दिया जा रहा था उस समय सरकार की विवेकशील भूमिका के साथ उत्पादकीय रोज़गार, न्यूनतम आधारभूत सुविधाओं को उपलब्ध करवाने तथा विकास के अन्य सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने का उद्देश्य रखा गया। नवीं योजना के दौरान अच्छे निष्पादन से उत्साहित होकर दसवीं योजना में 8 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर का लक्ष्य रखा गया। दसवीं योजना में मज़बूत निजी क्षेत्र के सापेक्ष सरकारी क्षेत्र की भूमिका को पुनः परिभाषित करने का प्रयास किया गया। साथ ही सभी राज्यों के संतुलित विकास करने, ऊर्जा–सुधार, तकनीकी उन्नति के साथ आर्थिक गतिविधियों की कुशलता बढाने के प्रयास किए गए। यह योजना सफल योजना रही जिसमें 7.9 प्रतिशत की वृद्धि दर प्राप्त हुई। ग्यारहवीं योजना में न केवल तीव्र वृद्धि बल्कि समावेशी विकास लक्ष्य तथा बारहवीं योजना में भी तीव्र, सतत एवं अधिक समावेशी विकास का लक्ष्य रखा गया।

वर्तमान सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था (नीति आयोग) (NITI – National Institution for the Transformation of India) की स्थापना 2015 में की। यह भारत सरकार को प्रमुख नीति निर्माण में दिशात्मक और नीतिगत विचार प्रदान करती है। भारत सरकार के लिए रणनीतिक और दीर्घकालिक नीतियों और कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करते हुए यह केन्द्र और राज्यों को प्रासंगिक तकनीकी सलाह भी प्रदान करता है। योजना आयोग के विकास के ऊपर से नीचे के दृष्टिकोण के स्थान पर यह आयोग विकास के नीचे से ऊपर के दृष्टिकोण पर विश्वास करता है। नीति आयोग को स्थापित हुए अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है। आयोग में आंतरिक मतभेद भी नजर आये हैं। राज्यों का विश्वास अर्जित करने में भी आयोग को और अधिक प्रयास करने होंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. भारत में योजना आयोग की स्थापना किस वर्ष की गई ?
2. स्वतंत्रता के समय देश में कौनसी समस्याएँ थी ?
3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना संसद के एक्ट से किस सन में हुई ?
4. भारत में पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि —ए आर देसाई
- आज का भारत —रजनी पाम दत्त
- आधुनिक भारत का इतिहास —एम एस जैन
- भारत का संविधान —जयनारायण पांडेय
- भारत का संविधान —डी डी बसु
- गांधी नेहरू कॉरेस्पोंडेंस —अर्जुन देव द्वारा संपादित
- भारत का स्वतंत्रता संघर्ष —बिपन चंद्र
- आजादी के बाद का भारत —बिपन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी
- भारत मे उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद —डॉ सत्या एम राय
- भारत का वृहद इतिहास भाग 3 —मजूमदार, राय चौधरी, दत्त
- आधुनिक भारत का इतिहास —जी एस छाबड़ा
- डिस्कवरी ऑफ इंडिया —जवाहर लाल नेहरू
- ग्लिम्प्सेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री —जवाहर लाल नेहरू
- स्ट्रगल फ़ॉर फ्रीडम —आर सी मजूमदार द्वारा संपादित (भारतीय विद्या भवन)
- ब्रिटिश पैरामाउंटसी एन्ड इंडियन रेनेसां —आर सी मजूमदार द्वारा संपादित (भारतीय विद्या भवन)

Website :

- http://planningcommission.gov.in
- http://nationalarchives.nic.in
- http://nehrumemorial.nic.in